OM 20 A FINAL-MAHARASHTRA_Page 1 and 2 14/01/2015 08:02 Page 8

सभी ने उन्हीं को पूजा... व याद किया

परमात्मा के वारे में कहते हैं कि वो ऐसा है, वैसा है, परन्तु वो कैसा है, इसमें सभी असमंजस में रहे। आदिकाल से अव तक परमात्मा को सभी ने ज्योतिर्विन्दु रूप में ही पूजा व याद किया है। चाहे वो यादगार लिंग रूप में हो या प्रकाश रूप में हो या किसी गोल पत्थर के रूप में हो। उसी निराकार परमात्मा शिव को सभी ने याद किया भी और उनकी यादगारें भिन्न-भिन्न स्थानों पर भी हैं जोकि कोई साकार प्रतिमा नहीं है बल्कि एक प्रतीक के रूप में है। उन्हीं यादगारों को सभी देवात्माओं, धर्मात्माओं, पुण्यात्माओं व महान आत्माओं ने भी याद किया।

ईसा मसीह ने परमात्मा को "दिव्य ज्योति" कहा

ईसा मसीह (जीज़स क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा है, गॉड इज़ लाईट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। जीज़स ने कभी यह नहीं कहा कि आई एम गॉड। उसने भी उस लाईट को परमात्मा का स्वरूप बताया।

हज़रत मूसा या इब्राहिम

ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा 'जेहोवा'। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं का प्रतीक है।

इक ओंकार, सत्नाम

सिक्खों के धर्म-स्थापक गुरु नानक ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वैर है, सत्नाम है, जिसको काल भी नहीं खा सकता। गुरु गोविन्द सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व की सभी आत्माओं के परमपूज्य परमपिता हैं।

मिस्र ने भी स्वीकारा परमात्मा का अस्तित्व

मिस्र में शिवलिंग की पूजा आईसिस और ओसिरिस नाम से होती थी। ओसिरिस शब्द "ईश" शब्द से बना है। शिवलिंग की प्रतिमा के साथ वे बैल की मूर्ति रखा करते थे।

शिव, श्रीराम के भी आराध्य

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्रीराम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते

तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्यों आवश्यकता हुई? वह जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या, आराधना करके प्राप्त की थी। कहा जाता है कि रावण भी शिव का पुजारी था, तो शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए उस परम शक्ति परमात्मा की शक्ति के बिना वह युद्ध में विजयी नहीं हो सकते। अत: सिद्ध है कि उन्होंने भी शिव की आराधना की थी।

श्रीकृष्ण ने भी किया पूजन

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिमान्, गुणों के भण्डार, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण

ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं ।

मुस्लिमों के भी हैं नूर-ए-इलाही

भारत में परमपिता परमात्मा शिव के ज्योतिस्वरूप शिवलिंग की व्यापक स्तर पर मान्यता तो है ही, परन्तु भारत से बाहर भी दूसरे धर्मों के लोग भी इसको मान्यता देते हैं। मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी इसी आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे संग-ए-असवद् कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है? उसको वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम् कहा, ज्योति स्वरूप कहा। ज्योति माना ही तेज। इसलिए मुसलमान जब नमाज़ पढ़ते हैं तो मक्का की दिशा में नमाज़ पढ़ते हैं। जिसको भारत वर्ष में मक्केश्वर कहा जाता है अर्थात् मुसलमानों के अल्लाह, नूर-ए-इलाही कहकर के निराकार को ही याद किया।

पारसियों में भी ज्योति रूप परमात्मा मान्य

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं जो सदा जलती आई थी, जो सदा अखण्ड है, परमात्मा का दिव्य स्वरूप है। तो इस धर्म में ज्योति स्वरूप पिता परमात्मा की ही मान्यता है।

गिरजाघर का रहस्य

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

शंकर ने भी किया शिव का ध्यान

कुछ लोग 'शिव' और 'शंकर' में अंतर नहीं समझते। वे कहते हैं कि शिव और शंकर एक ही इष्ट के दो नाम हैं। अब प्रश्न उठता है कि 'शिवलिंग' नामक प्रतिमा और 'शंकर' की देवाकार मूर्ति– ये दो अलग, भिन्न-भिन्न रूप वाले स्मरण-चिन्ह क्यों हैं? किसी व्यक्ति के पिता को उसके मित्र 'गुप्ता जी' अथवा 'रमेश चन्द्र जी' और उसके माता-पिता 'रम्मू' अथवा 'मेशी' कहकर पुकारते हों, यह तो हो सकता है परन्तु उस व्यक्ति का छायाचित्र अथवा कलाकार द्वारा बनाई उसकी प्रतिमूर्ति एक ही रूप की होगी न? बाल रूप की और वृद्ध रूप की दो अलग रूप वाली फोटो भी हो सकती हैं जिनमें काफी अंतर दिखाई देता हो परन्तु दोनों सशरीर, सकाय अर्थात् पिण्ड धारण किये हुए तो होंगे न? परन्तु शिव पिण्डी तो अण्डाकार ही होती है और शंकर की मूर्ति अंग-प्रत्यंग सहित ही सदा स्थापित और पूजित होती है, यहाँ तक कि उस देवाकार मूर्ति का कोई अंग थोड़ा भी खण्डित हो जाए तो उस अंग-भंग मूर्ति को पूजा के योग्य ही नहीं माना जाता। फिर शिव की मण्डलाकार प्रतिमा को तो 'ज्योतिर्लिंगम' ही माना जाता है जबकि शंकर जी को यह संज्ञा नहीं दी जाती। अन्यश्च, शंकर जी को तो समाधिस्थ ही प्राय: दिखाया जाता है जो इस बात का

प्रतीक है कि वे स्वयं किसी ध्येय के ध्यान में मन को समाहित किये हुए हैं जबकि शिव पिण्डी में कोई ऐसा भाव प्रदर्शित न होने से वह स्वयं ही परम-स्मरणीय है। अत: दोनों का अंतर प्रत्यक्ष ही है। फिर भी इसको एक ओर रख कर कुछ लोग शिवलिंग को पृष्ठ- भूमिका में देकर उस पर शंकर की मुखाकृति अंकित कर देते हैं और अन्य कई चित्रकार शंकर जी से ज्योतिर्लिंग को प्रकट होता हुआ दिखा देते हैं और पुराणों में तो ऐसी भी कथायें अंकित हैं कि 'शिव' 'शंकर' जी का ही एक शरीर-भाग है! सचमुच, यह तो मनुष्य की अज्ञानता की पराकाष्ठा ही है कि वे एक ओर खण्डित काया वाले देव की पूजा नहीं करते और दूसरी ओर वे किसी एक ही शरीर-भाग की पूजा की बात कहते हैं। स्पष्ट रूप से यह बात विवेक-विरुद्ध है।

जापान में चिंकोनसेकी का स्मरण

जापान में शिकोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊंचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। उसका नाम दिया है चिंकोनसेकी जिसका अर्थ शान्ति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं।

-:स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता:-
ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज़
शांतिवन,तलेटी
आबू रोड -307510
M-8107119445, 9414006096